

पांचे समवाय : पर्यायरूप !

श्री दिगम्बर जैन जगतमां पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी, निश्चय-व्यहार, उपादान-निमित्त अने क्रमबद्ध—अे पांच महासिद्धांतनो जैन-जगतमां शंखनाद फूंकनार तरीके वर्तमानमां तो जगविख्यात छे ज परंतु आ पांच महासिद्धांतो दिगम्बरधर्मना अध्यात्मनो आधारस्तंभ होवाथी पंचम आराना अंत सुधी आ सिद्धांतो उजागर रहेशे अेटले ते सिद्धांतोना प्रखर प्रचारकना रूपमां पूज्य गुरुदेवश्री पांचमा आराना अंत सुधी सुप्रसिद्ध रहेशे.

आ पांच महासिद्धांतोनी पवित्र ज्ञान-गंगामां स्नान करीने मुमुक्षु समाज पोताने धन्य थई गयानी अनुभूति करे ते तो स्वाभाविक ज होय. तदुपरांत 'आबाळ-गोपाळ सौने सदाकाळ जाणनारो जणाई रह्यो छे', 'स्वपरप्रकाशकस्वभाव वडे सदाय स्वने जाणी रह्यो छे', तथा 'दरेक द्रव्यनी दरेक समयनी पर्याय सत् होवाथी अहेतुक छे—तेना उत्पादव्ययनुं नथी कारण द्रव्य-गुण के नथी कारण निमित्त—तेथी पर्याय पोताना षट्कारकोथी स्वतंत्र परिणमे छे'—अेम स्वतंत्रतानी घोषणा वडे अध्यात्मपिपासु जिज्ञासुओने अकर्तास्वभाव लक्षगत् करावीने जाणे के तेओश्रीअे अमने मोक्षमार्गना राहगीर-पथिक बनावी दीधा होय तेम तेओश्री प्रति उपकृत अहोभाव प्रवर्ते तेमां शुं आश्चर्य !

पर्यायनी स्वतंत्रता भास्या विना द्रव्यस्वभावनी दृष्टि थवी असंभवित छे केम के द्रव्यस्वभाव स्वयं अकर्ता स्वभावी छे; तेथी पर्याय पोताना षट्कारकोथी स्वतंत्र परिणमी रही छे ते समजाशे तो ज पर्यायनुं कर्तृत्व छूटशे अेटले के तो ज हुं पर्यायमात्रनो अकर्ता ज्ञायक छुं अेवी प्रतीति उदित थशे. तेथी ज तेओश्रीना प्रवचनोमां अनेक हजारो वार पर्यायनी स्वतंत्रतानी घोषणा थती रहेली. प्रत्येक द्रव्यनी प्रत्येक समयनी पर्याय पोताना स्व-अवसरे पोताना षट्कारकोथी परिणमवामां पोताना द्रव्य-गुण तो कारण नथी अने निमित्त पण कारण नथी छतां अे पर्यायनुं स्वतंत्र परिणमन त्यारे ज थतुं होय छे के ज्यारे पांचेय समवाय आवी मळे. स्वभाव, पुरुषार्थ, भवितव्यता, काळलब्धि अने निमित्त.—आ पांचेय समवाय-कारणो आवीने मळे त्यारे पर्यायनुं परिणमन थाय. पर्यायना परिणमनमां द्रव्य-गुण के परद्रव्य तो कारण थतुं नथी तेथी पर्यायना परिणमनमां जे पांच समवाय कारणो छे ते पण पर्यायरूप ज होय, द्रव्यरूप-गुणरूप के परद्रव्यरूप कारण न होय, अर्थात् पांच समवायो पर्यायरूप होय, निमित्त अकिंचित्कर समवाय छे अेटले के निमित्तरूप परद्रव्यनी पर्याय सद्भावरूप के अभावरूप मात्र उपस्थित होवारूप अकिंचित्कर कारणरूप होय छे. बाकीना चार समवायोमां अेक स्वभाव सिवाय त्रण तो पर्यायरूप प्रतिभासे ज छे परंतु स्वभाव समवाय द्रव्यरूप छे के पर्यायरूप छे?—ते समजवा जेवुं छे. विचारीअे—

स्वभाव कहेतां द्रव्य ज होवानुं प्रतिभासित थाय. मानी लईअे पांच समवायमां स्वभाव छे ते द्रव्यरूप छे; तो पर्यायना स्वतंत्र परिणमनमां द्रव्य-गुण पण कारण नथी अे महासिद्धांतनुं खंडन थई जशे. वळी पांच समवायमां निमित्तनी पर्याय निमित्तकारणरूप छे ने बाकीना चारे समवाय उपादान कारणरूप छे. अेनो अर्थ अे थयो के स्वभावने द्रव्यस्वभाव मानवा जतां पर्यायनुं उपादानकारण द्रव्य थयुं. अर्थात् पर्याय पोताना षट्कारकथी स्वतंत्र परिणमे छे जेनुं कारण द्रव्य-गुण पण नथी अे सिद्धांतनुं खंडन थयुं! पर्यायनो कर्ता द्रव्यस्वभाव सिद्ध थता ज्ञायकना अकर्तास्वभावनुं खंडन थयुं!—याद रहे अत्रे अध्यात्मनी सूक्ष्मचर्चाथी विचारीअे छीअे; द्रव्य-पर्याय बे भिन्न-भिन्न टूकडा मानीने चर्चा नथी; द्रव्य-पर्यायनी स्वतंत्रतानी गहनताना संदर्भमां विचारीअे छीअे.—स्वभाव विना कार्य थाय? अरे भाई! स्वभाव विना तो कार्य थवानी कल्पना पण संभवे नहीं, अरे! स्वभाव शुं, बीजा चारे समवायमांथी अेकनी पण उपस्थिति विना कार्य संभवे नहीं, पर्यायनुं परिणमन थाय नहीं. परंतु अहीं विचारणीय बाबत अे छे के पांच समवायमां जे स्वभाव समवाय छे ते द्रव्यरूप छे के पर्यायरूप छे.

अत्रे विचारणा अे चाले छे के पोताना षट्कारकोथी स्वतंत्रपणे परिणमती प्रत्येक समयनी पर्यायनुं परिणमन त्यारे ज थाय छे के ज्यारे पांचेय समवाय आवीने मळे. वळी पर्यायना परिणमननुं कारण द्रव्य-गुण न होवानुं स्वीकार्युं होवाथी पांचेय समवाय पर्यायरूप ज होई शके तो पछी स्वभाव समवायनुं शुं?

स्वभाव बे प्रकारना होय छे : द्रव्यस्वभाव अने पर्यायस्वभाव. ज्यारे प्रमाणना द्रव्यनी चर्चा होय त्यारे द्रव्यनुं परिणमन थवामां कारणरूप तेनुं द्रव्य होय छे. परंतु अकर्ता ज्ञायकनी दृष्टि करवाना प्रयोजनपूर्वक पर्यायनी स्वतंत्रतानी पराकाष्ठाअे पहोंचवानी चर्चामां पर्यायनुं परिणमन थवामां पांचेय समवाय—चाहे उपादानरूप हो के निमित्तरूप हो—पर्यायरूप होय तो ज पर्यायनुं सत् अहेतुकपणुं सिद्ध थवाथी पर्यायना कर्तृत्वनुं लक्ष छूटीने अकर्तास्वभावनुं लक्ष थई शकशे. जोके पांच समवायनी सामान्य चर्चामां स्वभाव समवायने द्रव्य-पर्यायने अभेद करीने स्वभावने द्रव्यरूपे प्ररूपणा करवामां आवी शके छे, तोपण पर्यायनी स्वतंत्रतानो ताग लेवामां स्वभाव समवाय पर्यायरूप स्वभाव होवानुं समजी शकाय छे.

पांच समवायमां पर्यायरूप स्वभाव अेटले शुं? दृष्टांतथी विचारीअे—

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामीनो तीर्थकर थवानो स्वभाव छे. तेओ तीर्थकरनुं द्रव्य छे अेम द्रव्य-पर्यायनी अभेदताथी कहेवाय छे. पूज्य गुरुदेवश्रीना आत्मानो स्वभाव तीर्थकररूप मानवा जईशुं तो अनंता आत्माओनो स्वभाव चाहे अनंता सिद्ध परमात्मा हो के अनंता संसारी आत्मा हो, बधानो स्वभाव समान ज होय, तेथी अनंता जीवो

पण तीर्थकरत्वयुक्त मानवा पडशे ! अर्थात् पूज्य गुरुदेवश्रीनी पर्यायनो स्वभाव तीर्थकरनो छे. पर्यायनो स्वभाव तीर्थकररूप होवा छतां अर्थात् अेक स्वभाव समवाय मोजूद होवा छतां बाकीना चारेय समवाय भेगा मळशे त्यारे पांचमुं समवाय-तीर्थकरत्व भेगा थईने पूज्य गुरुदेवश्रीनी पर्यायमां तीर्थकरत्वपणुं परिणमशे.

पांचेय समवाय पर्यायरूप होवा छतां पांचेयनी पोतानी विशिष्टता छे. निमित्तरूप समवाय परद्रव्यनी ज पर्याय होय, अेक ज द्रव्यना अन्यगुणनी पर्यायने पांच समवायमां निमित्तरूप समवाय नथी गणवामां आवती परंतु अन्य परद्रव्यनी पर्यायने निमित्तरूप समवायमां लेवाय छे अने ते पर्याय सद्भावरूप पण होई शके ने असद्भावे पण होई शके छे. बाकीना चारेय समवायनी पर्याय सद्भावरूप ज होय छे. बीजी विशेषता अे छे के स्वभाव-समवाय सिवायना चारेय समवाय जे पर्यायनुं जे समये परिणमन थवानुं होय ते समये ज तेनुं अस्तित्व होई शके, वहेलुं नही. परंतु स्वभाव समवायने काळनुं बंधन लागु पडतुं नथी. अर्थात् बाकीना चारेय समवायनी हयाती न होय अने पर्यायनुं परिणमन पण न होय छतां तेनो स्वभाव समवाय होय छे. दा.त. बाळकीनो जन्म थतां 'आ बाळकीनो माता बनवानो स्वभाव छे.' त्यां ते बाळकीनो स्वभाव पितृत्वनो नथी पण मातृत्वनो छे अने ते पर्यायरूप स्वभाव समवाय वर्तमानमां हयात छे. परंतु मातृत्वपणे परिणमन तो त्यारे ज थशे के ज्यारे बाकीना चारेय समवाय आवीने भेगा थशे.

अेटले के पर्यायनुं परिणमन न होवा छतां स्वभाव-समवायनुं अस्तित्व होय छे. अे रीते स्वभाव-समवायने 'तत्समयपणुं' लागुं पडतुं नथी.

निष्कर्ष अे के पर्यायगत् पांचेय समवाय वडे परिणमता पर्यायना परिणमनने न तो पोताना द्रव्य-गुणना कारणपणानी अपेक्षा छे के न तो निमित्त-परद्रव्यनी पराधीनता छे. पर्यायना परिणमननी आवी स्वतंत्रतानी पराकाष्ठा समजमां आवतां सत् अहेतुक स्वतंत्रपणे परिणमती पर्यायनो हुं कर्ता नथी परंतु मात्र ज्ञाता छुं अेम अकर्तृत्व स्वभावी ज्ञायकनी दृष्टि उदित थाय छे. एवी भावना सह....